# पाठ 4. हिम्मती सुमेरा

## पाठ का परिचय

यह एक ऐसे साधारण-से गरीब बालक की कहानी है जिसकी माँ नहीं है। उसके पास एक बहुत प्यार करने वाले पिता हैं और ढेर सारी हिम्मत। पिता ने उसे सच्चाई और ईमानदारी से जीना सिखाया है। एक शाम पिता की तबियत खराब हो गई और उन्हें लकवा मार गया। सुमेरा बहुत पढ़ना चाहता था लेकिन अब कैसे संभव था? उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने तय किया कि वह पढ़ेगा भी और सब्ज़ी और फल बेचकर कमाएगा भी। उसने अपने मास्टर साहब से तीस रुपये उधार लिए। उन रुपयों से उसने संतरे खरीदे और सब्ज़ीवालों के बीच जाकर बैठ गया। शाम तक उसके पास 36 रुपये भी आ गए और चार संतरे भी बच गए। वह बड़ा खुश था। अब उसे सब कुछ आसान लग रहा था। लेकिन दूसरे दिन जब वह फल बेचने बैठा तो एक पुलिसवाला आया। सभी ने उसे उस पुलिसवाले को दो रुपये देने को कहा। उसने बिना किसी वजह दो रुपये देने से इनकार कर दिया। अगले दिन कमेटी की गाड़ी आई और उसके संतरे उठाकर ले गई। सुमेरा हिम्मत कर उस व्यक्ति के पास पहुँचा जिसे उसके पिता दिल्ली का राजा बताते थे। सुमेरा ने उस पुलिसवाले की शिकायत की। राजा साहब दंग रह गए। उन्होंने उस बच्चे की हिम्मत देख उसे काम करने का लाइसेंस दिलवाया और सौ रुपये इनाम भी दिए। सुमेरा ने परिश्रम करके अपना कारोबार आगे बढ़ाया और अपने पिता का इलाज़ भी करवाया। दिल्ली के सब्ज़ी बाज़ार में आज भी सुमेरा की दुकान है।

## पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हिम्मत कभी नहीं हारनी चाहिए। कठिन परिश्रम से सब कुछ आसान हो जाता है। मुश्किलों को झेलने वाला हमेशा ऊँचाइयों को छूता है।

## पाठ का वाचन

बच्चों से कहानी का मौन वाचन करने को कहें। मौन वाचन करते समय बच्चे कठिन शब्दों को रेखांकित करते चलें। पढ़े गए परिच्छेद से संबंधित प्रश्न भी बनाएँ। कहानी का वाचन कर लेने पर उन्हें कहानी को कक्षा में संक्षेप में सुनाने को कहें। बच्चों को एक-एक अंश संवाद-शैली में लिखने को कहें और उसका कक्षा में मंचन करवाएँ।

## महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से इन प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- हिम्मत जीवन में क्यों आवश्यक है?
- समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध कैसे लड़ा जा सकता है?
- सुमेरा अगर पुलिस अधिकारी के खिलाफ़ न लड़ता तो उसका क्या होता?
- सुमेरा ने जो कुछ किया वह सही था या गलत?